International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-11-2020; Accepted: 22-11-2020; Published: 07-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 130-133

प्रगतिशील काव्यधारा के कवि नागार्जुन

चंद्रलेखा पुरोहित[1], डॉ सरला शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, भूपाल नोबल विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2]प्राध्यापक हिंदी विभाग, भूपाल नोबल विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
नागार्जुन प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि है। उनकी कविताएँ जीवन के अनेक पक्षों को एक साथ लेकर चलती है। वे एक साधारण, निम्नवर्गीय किसान परिवार से संबंधित थे इसलिए वे किसानों के जीवन संघर्ष से पूर्णतया अवगत थे। वे सही अर्थो में धरती के कवि थे। छायावादी काव्यधारा में यथार्थ से दूर कल्पना लोक में विचरण करने की प्रवृति दिखाई देती है परंतु वही प्रगतिशील कवि यथार्थ से गहनता से जुडाव रखने वाले थे। उनके काव्य में मजदूरों के प्रति सहानुभूति एवं शोषकों के प्रति घृणा स्पष्ट व्यक्त हुई है। नागार्जुन एक ऐसे कवि थे जिनकी कविताओं में हमें हृदय की सच्ची टिस,वेदना और सहानुभूति की अनुभूति होती है। उन पर मार्क्सवादी और कम्यूनिस्ट आन्दोलन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने अपनी कलम से जन साधारण की आवाज को मजबूती प्रदान की। तभी उन्हें जनकवि कहा जाता है। उन्होंने अपनी विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली में सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश, अन्याय का विरोध और समकालीन मुद्दों पर बहस आदि विषयों पर अपनी कविताओ में चर्चा प्रस्तुत की।

मूलशब्द: प्रगतिवाद ,जनसाधारण,सामाजिक समस्याएँ, सामाजिक यथार्थ, जन चेतना

प्रस्तावना
प्रगतिशील काव्यधारा से पूर्व छायावाद में भी हमें सामाजिकता, विश्वबंधुत्व एवं व्यापक मानवता के तत्वों का समन्वय दृष्टिगोचर होता है किन्तु उसका मूल आधार कल्पना और आदर्श है। वहीँ प्रगतिशील कवियों की दृष्टि समाज के यथार्थ पर अधिक पड़ी। यूं तो इस धारा में अनेक कवि हुए परन्तु नागार्जुन उनमें विशिष्ट स्थान रखते है। वे सच्चे अर्थों में सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। उनका सम्पूर्ण काव्य जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करता है। नागार्जुन की काव्य चेतना का गहनता से निरिक्षण करने पर हम पाते वे पुराने समाज को बदल कर समाजवादी बनाना चाहते है। उन पर मार्क्सवादी और कम्यूनिस्ट आन्दोलन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने अपनी कलम से जन साधारण की आवाज को मजबूती प्रदान की। तभी उन्हें जनकवि कहा जाता है। उन्होंने अपनी विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली में सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश, अन्याय का विरोध और समकालीन मुद्दों पर बहस आदि विषयों पर अपनी कविताओ में चर्चा प्रस्तुत की। वे प्रत्येक आदमी में साहस, उत्साह और कर्म का संचार करते है ताकि वे पूर्ण सामाजिक बनने की अपेक्षा और जिज्ञासा को बनाए रखे। उन्होंने जीवन और समाज के नवीन लक्षणों को पहचाना और उन्हीं से प्रेरित भी हुए। उनकी कवितायेँ 'युगधारा',

'सतरंगे पंखो वाली', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'प्यासी पथरायी आंखे', 'तालाब की मछलियाँ', 'तुमने कहा था' आदि में संगृहीत है। वे जन्म से कवि, प्रकृति से घुमक्कड़ और विचार से मूलतः मार्क्सवादी है। कविता के लिए कोई भी विषय चुन लेते थे:- लाल साहू, नेवला और कटहल। घुमक्कड़ ऐसे कि कभी एक जगह टिकते नहीं थे। मूलतः मार्क्सवादी थे परंतु कभी- कभी उससे बाहर भी जाक लेते थे। ठेठ देशी संस्कारों ने उनको पशचिमी प्रभावों से हमेशा बचाएं रखा। बिहार दरभंगा जिले के तरौनी ग्राम में ३० जून १९११ को नागार्जुन का जन्म और ५ नवम्बर १९९८ को निधन हुआ। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था। राष्ट्रभाषा हिंदी में नागार्जुन तथा मातृभाषा मैथिली में वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' नाम से लिखते थे। उन्हें आधुनिक कबीर कहा जाता है क्योंकि उनके स्वभाव में वहीँ निडरता, बेबाकी और भाषा का चुटीलापन देखा जा सकता है जो कबीर में था। वे अक्सर कहा करते थे कि पजामा, जो नीचे से फटा हो, टायर वाली चप्पल और चिना बादाम कम्यूनिस्टो की पहचान है।

ग्रामीण जन के प्रतिनिधि नागार्जुन: भारत गावों का देश है और जिन काव्यो ग्रामीण जीवन का स्वरुप वर्णित हो वही वास्तव में भारतीय कहलाने के योग्य है। भारतीय ग्राम जीवन का यथार्थपरक चित्रण बाबा नागार्जुन ने जितनी तन्मयता के साथ किया, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अपने अपने भोगे हुए जीवन और प्रत्यक्ष जीवनानुभवों को कविता में मूर्तरूप प्रदान किया है। उन्होंने केवल सुन्दर और भव्य पर ही दृष्टिपात नहीं किया बल्कि समाज के यथार्थ स्वरुप को हमारे समक्ष उद्घाटित किया है। उन्होंने मेहनतकश मजदूरो के जीवन संघर्षो को,दुखी और पीड़ित वर्ग की गहन पीड़ा को अपनी कविता में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की। वे गरीबों और शोषितों के हिमायती कवि थे। उनका मानना था कि जो अन्न दाता है उसे ही भूखा सोना पड़ता है। भूखे व्यक्ति के लिए अन्न ही ब्राहम है। भूखा व्यक्ति भजन नहीं कर सकता इसलिए उन्होंने मजदूरों को हमेशा लड़ते रहने की सलाह दी है:-

''भूखों मरते हो बच्चे तो यो ही मत रह जाओ
आंते सुख रही हो तो आंसू मत वृथा बहाओ
हाथ पैर वाले हो नाहक कायर नहीं कहाओ
कीड़ो और मकोड़ों जैसेयो मत प्राण गवाओ। ''

उनकी कविता मानवीय संवेदना से परिपूर्ण है। उनका भावुक हृदय किसानों और मजदूरो की पीड़ा देखकर द्रवित हो उठता है। वे स्वयं को आम जन से भिन्न नहीं देखते। उनकी यही एकरूपता उनकी कविताओ में एक विलक्षणता ले आती है।

'सच सच बतलाओ
नागवार तो नहीं लगाती है
जी तो नहीं कुडता
गिन तो नहीं आती। ''

नागार्जुन ने उन मध्यवर्गीय लोगों पर भी करारा व्यंग्य किया है जो मजदूरों के बगल में बैठने से अपने स्तर को गिरा हुआ मान लेते है और उन्हें उनके मैले कुचैले वस्त्रों से गिन आती है जबकि उनके अनुसार ये मेहनतकश इन मध्यवर्गीय दिखावटी लोगों से कई गुना ऊँचे है क्योंकि वे सपने में भी धरती की धडकनों को सुनते है। ''

जन चेतना के कवि: १९३० के आस- पास भारत में नवीन चेतना का प्रादुर्भाव होने लगा। तत्कालीन भारतीय जनता, विशेषकर नयी पीढ़ी में समाजवाद के प्रति लगाव उत्पन्न होने लगा। इस नवीन चेतना की ध्वनि साहित्य में अनेक कवियों की वाणी में सुनाई पड़ने लगी। इसी चेतना को प्रगतिवाद के नाम से साहित्य में पहचाना गया।

इसके सशक्त पुरोधा नागार्जुन थे। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में एकरूपता थी। नागार्जुन एक साधारण, निम्नवर्गीय परिवार से सम्बंधित थे इसलिए संघर्ष से उनका गहरा सम्बन्ध था। उनकी कविताए भी कहीं न कहीं उनके इसी जीवन संघर्ष को उद्घाटित करती है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को बेहिचक कह दिया। वे अपने और जनता के बीच किसी तीसरी वस्तु को नहीं आने देना चाहते थे इसलिए उन्होंने सरकारी नौकरी को भी ठुकरा दिया और साफ शब्दों में कह दिया 'नगार्जुन सरकारी नौकरी में चला जायेगा तो जनता को व्यंग्य का स्वाद कहाँ से मिलेगा। '

उन्होंने सामाजिक समस्याओं का गहनता से अवलोकन किया। वे खुले हृदय से प्रत्येक घटना को देखते है और उसके विश्लेषण के पश्चात् उसे कविता के सांचें में ढाल देते है। नागार्जुन ने स्वयं को जनकवि कहा और यह उनका वैचारिक उद्घोष ही कहा जा सकता है। राष्ट्रकवि की राजकियता ने उन्हें कभी आकृष्ट नहीं किया।

उनकी कविताये पीड़ित जन की आवाज है। जन सधारण की आवश्यकताएं और आकांक्षाए उनके काव्य की विषयवस्तु है। कवि की सृजनात्मक प्रेरणा ही इन पीड़ित जनों की पीड़ा में छुपी हुई है। उन्होंने आधुनिक मानव के संकट को सही दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया। आज का समाज अनेक समयस्याओ से लड़ रहा है किन्तु इसी समाज में एक ऐसा वर्ग भी है जिसको अपने ऐशो -आराम , मौज-मस्ती के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता है। यही तो समाज का यथार्थ है और यही मानवीय सत्य है। उनकी कवितायेँ इसी सत्य को उजागर करती है। उन्होंने सामाजिक विषमता ,आर्थिक शोषण और भ्रष्टाचार पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये है। ये व्यंग्य इतने प्रखर और पैनें है कि इससे समाज की चेतना प्रभावित हुए बिना नहीं रहती है। इस प्रसंग में उनकी अनेक कविताओ का उल्लेख किया जा सकता है।

'प्रेत का बयां' उनकी ऐसी ही एक प्रसिद्ध कविता है। यमराज के सामने एक प्रेत खड़ा है। यमराज कड़ककर पूछता है।

'सच सच बतला !
कैसे मरा तू
भूख से , अकाल से !
बुखार से, कालाबाजार से !
पेचिस,बदहजमी,प्लेग
महामारी से?''
प्रेत ने सीधा उत्तर न देकर बात बनायीं तो यमराज ने फिर पूछा:-
"वाह भाई वाह
तो तुम भूख से नहीं मरे। ''
फिर प्रेत ने कहा -
"अचरज की बात है
यकीं नहीं आता है मेरी बात पर आपको ?
कीजिए न कीजिए आप चाहे विश्वास
साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश
.....
किन्तु भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको। ''

भुखमरी के प्रश्न पर सरकार की ओर से दिए जाने वाले उत्तर को स्मरण कर इस व्यंग्य का निशाना देखा जा सकता है। नगार्जुन समाज की वास्तविक बीमारी से अवगत थे इसलिए उनके व्यंग्य भी सार्थक और सुनिर्दिष्ट है। वे प्रयोगवादियों के समान निर्थक दिशाहीन कविताएँ नहीं लिखते थे। वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि यदि देश को साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त करना है तो साधारणजन को समाज की अव्यवस्थाओं के प्रति जागरूक करना आवश्यक है।

निष्कर्ष: इस प्रकार हम देखते है कि नागार्जुन ने जन कविता की नवीन कोटि प्रारंभ की। इसे

समजने के लिए हमें नवीन दृष्टि और नवीन मानदंडो को समजना आवश्यक है। वे दिखावटीपन के सर्वथा खिलाफ थे। नागार्जुन का साफ-साफ कहना था कि कवि को बाहर-भीतर एक होना चाहिए उसे अपने परिवेश के प्रति सचेत और जागरूक होना चाहिए। कवि की काव्य चेतना और मानसिकता में एकरूपता होनी आवश्यक है तभी वह जनसाधारण को जगा सकेगा। अत:नागार्जुन एक सशक्त व्यंग्यकार थे। उनकी कविताओं में आस्था,दृढ़ता और सहानुभूति की अभिव्यक्ति स्पष्ट परिलक्षित है जिसने उनकी वाणी में एक जादुई शक्ति का संचार कर दिया। उनमे शैली और शिल्प का अभाव होने पर भी उनकी भावनाओं की सच्चाई और अनुभूति की गहराई हमें बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती है। नामवर सिंह कहते है, "यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिन्दी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोइ नहीं हुआ काव्य संसार में उनकी एक अलग ही पहचान है। समकालीन कविता की मर्यादाओं का बखूबी पालन करते हुए उन्होंने जन सामान्य की मुक्ति का स्वर संपूर्ण जोश के साथ उठाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन का कवि कर्म, खगेन्द्र ठाकुर
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेन्द्र
3. HINDI हिंदी साहित्य का इतिहास, गणपतिचन्द्र गुप्त
4. हिंदी समय वेबसाइट